Dr. Gautam Singh,
Associate Professor,
Rohtas Mahila College
SASARAM

Study Material for
B.A. (HONS) Part I.
Paper: I
Date - 5.5.2020
Page No. 05

Rest Part of → किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग के आधार पर दुर्योधन की प्रजानीति का वर्णन, या भारवि की राजनैतिक सूझ-बूझ का परिचय! —

दिनांक 4.5.2020 को बनेचर द्वारा दुर्योधन की प्रजानीति के संबंध में व्यवहार को देखा/पढ़ा। जिसमें श्लोक संख्या 11 के अनुसार वह धर्म अर्थ एवं काम का उनके उनके स्वरूप के अनुसार विभाजन करके कार्य करता था जिससे ये तीनों ही दुर्योधन के के गुणों के कारण आपस में मित्रता सी प्राप्त करके अर्थात् सामञ्जस्य के साथ एक दूसरे की वृद्धि में बाधा नहीं पहुँचाता है।

दुर्योधन का निर्विघ्न साम नीति का प्रयोग धनदान के बिना नहीं होता, प्रचुर धनदान भी समुचित सत्कार के बिना नहीं होता। और विशेष प्रकार का सत्कार भी गुणों का विचार किये बिना नहीं होता।

निरत्ययं साम न दानवर्जितं
न भूरि दानं विरहय्य सत्क्रियाम्।
प्रवर्तते तस्य विशेषशालिनी
गुणानुरोधेन बिना न सत्क्रिया ॥ 12 ॥

तस्य निरत्ययं साम दानवर्जितं न प्रवर्तते, सत्क्रियां विरहय्य भूरि दानं न (प्रवर्तते), गुणानुरोधेन बिना विशेषशालिनी सत्क्रिया न।
इस श्लोक के माध्यम से भारवि ने साम क्या दान की नीति का उल्लेख किया है।

Scanned by CamScanner

पुनः दुर्योधन की दण्ड नीति का एवं निष्पक्ष न्याय प्रियता का उल्लेख करते हैं —

वसूनि वाञ्छन् वशीन मन्युना
स्वधर्म इत्येव निवृतकारणः ।
गुरूपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा
निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम् ॥ 13 ॥

वस्तुओं को वश में रखने वाला वह दुर्योधन धन प्राप्त करने की इच्छा से नहीं, और न ही क्रोध के कारण (दण्ड देता है), अपितु बिना किसी कारण के ही यह मेरा धर्म है ऐसा मानकर गुरुओं (धर्मशास्त्रकारों) के उपदेश के अनुसार दण्ड देकर शत्रु के और पुत्र के भी धर्मोल्लंघन का निवारण करता है।

दुर्योधन की रक्षाव्यवस्था और भेदनीति को भी शानदार है। भारवि वनेचर के मुखारविन्द से इसे उद्घाटित करते हैं —

विधाय रक्षान् परितः परेतरा-
नशंकितात्मारमुपैति शंकितः ।
क्रियापवर्गेष्वनुजीविसात्कृता:
कृतज्ञतामस्य वदन्ति सम्पदः ॥ 14 ॥

शंका करता हुआ वह चारो ओर (शत्रुओं का फोड़ने वाले) अपने जनों को, रक्षकों के रूप में नियुक्त करके शंकारहित आकार व्यवहार करता है, सौंपे गए कार्यों के पूरा करने पर सेवकों को पुरस्कार के लिए दी सम्पत्तियाँ उसकी कृतज्ञता प्रकट करती है।

Scanned by CamScanner